चण्, स्वन्, ratione habitâ, gutturales facile in sibilantes degenerare; lat. *cano*, goth. *hana* gallus.)

क्वण *m.* (r. क्वण् s. अ) sonus. Am.

क्वणन *n.* (r. क्वण् s. अन) *id.* Am.

क्वणित *n.* (r. क्वण् s. त) sonitus. Ragh. 7.38.: विगाढे विलोलघण्टाक्वणितेन नागः·

क्वथ् 1. *P.* coquere. Man. 6.20.: अश्नीयाद् यवागूङ् क्वथिताम्·

क्वाण *m.* (r. क्वण् s. अ) i. q. क्वण. Am.

क्वेल् 1. *P.* (गतौ *K.* चालगत्योः *V.*) ire, se movere. *V.* (Cf. केल् et क्ष्वेल्.)

क्षज् 1. *A.* (दानगत्योः) dare; ire.

1. क्षञ्ज् 1. *P.* (grammatici scribunt क्षजि, gr. 110[a].) *id.*

2. क्षञ्ज् 10. *P.* (तङ्के; grammatici scribunt क्षजि, gr. 110[a].) *id.*

क्षण् 8. *P. A.* क्षणोमि, क्षण्वे (हिंसायाम् *K.* वधे *V.*) vulnerare, ferire, occidere. Lass. 33.19.: अक्षतशरीर· (Cf. क्षिण् et क्षि cl. 5.; gr. *καίνω, κανῶ*; *καίνυται* = क्षणुते; *ξαίνω*; fortasse *σίνομαι* e *ξίνομαι*.)

c. परि *id.* Ur. 8.3. infr.: अपरिक्षतशरीर; Ram. I. 47.24.: गुरुशापपरिक्षत·

c. वि *id.* A. 11.1.: शरविक्षत; 10.30.: विक्षतश्चा ’यसैर् बाणैः ... महीम् अभ्यपतद् राजन् प्रभग्नम् पुरम्·

क्षण *m.* 1) pars temporis definita, Wils. «*equal to thirty* Calas *or four minutes*». 2) momentum. - *Acc.* क्षणम् *Adv.* per momentum. Bhar. suppl. 7. Lass. 2.7. *Instr.* क्षणेन statim. H. 4.10. N. 2.3. (Pottius recte, ut mihi videtur, hoc vocabulum explicat ex ईक्षण, abjecto ई; respicias nostrum *Augenblick.*)

क्षणदा *f.* (e praec. et द dans, in *fem.*) nox. Ragh. 8.73.

क्षणदाचर *m.* (e praec. et चर iens) cognomen Râkschasorum, significans noctu iens. Dr. 2.3.

क्षणिक (a क्षण s. इक) per momentum temporis durans. Hit. 20.6.

क्षणिका *f.* (*Fem.* praec.) fulmen. Hem.

क्षत (r. क्षण् s. त) 1) vulneratus, occisus. 2) *n.* vulnus. Ragh. 2.53.

क्षतज (e praec. et ज natus) sanguis. Ragh. 7.40.

क्षति *f.* (r. क्षण् s. ति) eversio, exstinctio, vastatio. Sak. 32.16. Hit. 28.18.

क्षत्र *m.* (ut mihi videtur, e क्षम् terra, abjecto म्, vel क्षा *id.* correpto आ, et त्र servans, a r. त्रा, igitur esset = महीपाल terrae custos; scribitur etiam क्षत्त्र et deduci solet a क्षत vulnus et त्र servans, v. Ragh. 2.53.) Kschatrus i. e. vir secundi vel militaris et regii ordinis.

क्षत्रिय vel क्षत्त्रिय (a praec. s. इय) *id.* Dr. 7.1.

क्षप् 10. *P.*: क्षपयामि (प्रेरणे *K.* क्षेपे *V.*) 1) sternere, prosternere, dejicere, excidere, destruere. Mah. 1.4128.: अक्षतः क्षपयित्वा ’रीन् सङ्ख्ये ऽसङ्ख्येयविक्रमः; Ragh. 8.46.: तरुर् न पातितः क्षपिता तदिटपाश्रिता लता; Ram. II. 12.69.: वैदेही वत मे प्राणान् शोचन्ती क्षपयिष्यति; In. 5.57.: तत्र तं (शापं) क्षपयिष्यसि· 2) lavare, purgare. Man. 5.157.: कामन् तु क्षपयेद् देहम्; 5.69.: क्षपेयुस् त्र्यहम्· *Schol.* शौचङ् कुर्युः· (Cf. क्षिप्; fortasse huc pertinet goth. *skapa* creo, transpositis litteris *ks̍* in *sk*, et servatâ in fine radicis tenui labiali, sicut in *slêpa* = स्वप्. Quod ad sensum attinet, rationem habeas, verba movendi facile significationem faciendi assumere; v. e. c. चर्, सृज्.)

क्षपस् *n.* (r. क्षप् s. अस्) nox, *in dial. vêd.*, v. Ros. Sp. 18. 5. *apud* Lass. p. 100. (Lat. *crepus-culum*, mutatâ sibilante in *r*, sicut in gr. *ῥίπτω* pro *κρίπτω* = क्षिप्, *κραιπνός* = क्षिप्र, q. v., *κρείων* = क्षयन्, v. क्षि; etiam *κνέφος*, *κνέφας* ad क्षपस् et *crepus-culum* traxerim, mutatis liquidis *ρ* et *ν*, et *ψέφας, ψέφος*, mutatâ gutturali in labialem.)

क्षपा *f.* (r. क्षप् s. आ) nox. Sa. 5.80.; *v.* क्षपस्.

क्षपाकर *m.* (e praec. et कर faciens) luna. Am.

1. क्षम् 1. *A.* interdum *P.* tolerare, perferre, pati. N. 7.8.: न चक्षमे ततो राजन् समाह्वानम्; Br. 1.8.: रोरुध्यमानांस् तान् दृष्ट्वा ... कारुण्यात् साधुभावाच्च कुन्ती राजन् न चक्षमे; Hit.: आज्ञाभङ्गकरान् राजा न क्ष-